भारतीय शिक्षा को सुधारने के लिए आवश्यक कदम

श्रीमती नेहा परिहार
सहायक प्राध्यापक
विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजूकेशन, भोपाल

भूमिका : भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली को परतंत्र काल की शिक्षा प्रणाली माना जाता है। यह ब्रिटिश शासन की देन मानी जाती है। इस प्रणाली को लार्ड मैकाले ने जन्म दिया था। इस प्रणाली की वजह से आज भी सफेद कॉलरो वाले लिपिक और बाबू ही पैदा हो रहे है। इसी शिक्षा प्रणाली की वजह से विद्यिार्थियों का शारीरिक और आत्मिक विकास नही हो पा रहा है।

प्राचीन भारत में शिक्षा का महत्व प्राचीन काल में शिक्षा का बहुत महत्व था। सभ्यताएँ संस्कृति और शिक्षा का उदय सबसे पहले भारत मे हुआ था। प्राचीन काल मे शिक्षा का स्थान नगरों और शोरगुल से बहुत दूर वनों के गुरुकुल में होता था। इन गुरुकुलों का संचालन ऋषि–मुनि करते थे। प्राचीन काल में विद्यार्थी ब्रह्मचर्य का पालन करते थे और अपने गुरु के चरणों में बैठकर ही पूरी शिक्षा प्राप्त करते थे।

नवीन शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता : हमारा भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ था। हमारे कर्णधारों का ध्यान नई शिक्षा प्रणाली की तरफ गया क्योकि ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली हमारी शिक्षा प्रणाली के अनुकूल नही थी। गाँधी जी ने शिक्षा के विषय मे कहा था कि शिक्षा का अर्थ बच्चो मे सारी शारीरिक, मानसिक और नैतिक शक्तियो का विकास करना होता है। शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए अनेक समितियाँ बनाई गयी।

कमेटी द्वारा एक विशाल योजना बनाई गई जो तीन साल के भीतर 50 प्रतिशत शिक्षा का प्रसार कर सके। सैकेण्ड्री शिक्षा का निर्माण किया गया। विश्वविद्यालय से ही समस्या को सुलझाने के प्रयास किए गए। बाद में बेसिक शिक्षा समिति बनाई गई जिसका उद्देश्य भारत में बेसिक शिक्षा का प्रसार करना था। अखिल भारतीय शिक्षा समिति की सिफारिश की वजह से बच्चों में बेसिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया था।

भारत में शिक्षा की स्थिति

1. 22 करोड़ स्कूली बच्चों में से 20 करोड़ से भी ज्यादा कॉलेज नहीं जा पाते।
2. 10 प्रतिशत ग्रेजुएट्स ही अच्छी जॉब के योग्य होते है।
3. 75 फीसदी स्टूडेंट्स के पास कॉलेज की फीस जमा करने के पैसे नही होते।

4. आजादी से पहले 20 यूनिवर्सिटीज और 500 कॉलेज थे। आज 545 यूनिवर्सिटीज और 45 हजार कॉलेज है।

भारतीय शिक्षा को सुधारने के लिए आवश्यक कदम

वैल्यू–बेस्ड हो एजुकेशन

एजुकेशन मतलब सिर्फ किताबी जानकारी नही होना चाहिए। पूर्व आईपीएस किरण बेदी कहती है एजुकेशन चार तरह के होते है पर्सनल, प्रोफेसनल, वैल्यू–बेस्ड और सोशल। आजकल स्कूलो मे प्रोफेशनल एजुकेशन दिया जाता है। वैल्यू–बेस्ड और सोशल एजुकेशन आपको एक अच्छा नागरिक बनाती है। एक परफेक्ट सिटीजन के लिए इन चारों तरह की शिक्षा जरुरी है। टीचर्स को इस तरह ट्रेंड करने की जरुरत है कि वह अपने स्टूडेंट्स को सोशल लीडर्स बना सके उनका भविष्य निर्माण कर सके।

पहले करप्शन पर ध्यान दे

सरकार को पहले करप्शन हटाने के लिए कोशिश करनी चाहिए क्योकि इसकी वजह से योजनाएँ तो अच्छी–अच्छी बनती है लेकिन उनका फायदा आम आदमी नही उठा पाता। एजुकेशन के साथ भी यही है। सवाल ये है कि कोई चैक करने वाला होना चाहिए कि जो पैसा गया वहाँ यूज हुआ कि नही।

टीचर्स निभाएँ अपनी जिम्मेदारी

हमारे यहाँ अभी ट्रेंड और एकेडमिक ओरियंटेड टीचर्स की बहुत कमी है। आज टीचर्स में डेडिकेशन की कमी है। जरुरी है कि एक सिस्टम डेवलप किया जाए जिसमे टीचर्स को कुछ जिम्मेदारी दी जाए। स्टूडेंट को एक शिक्षित नागरिक बनाने के साथ–साथ इस काबिल भी बनाना कि वह अपने पैरों पर खडा हो सके इन सबकी जिम्मेदारी टीचर की होती है।

टीचर्स मे हो डेडिकेशन

एनसीईआरटी के पूर्व डायरेक्टर जे. एस. राजपूत मानते है कि गवर्नमेंट स्कूलों मे आज भी मूलभूत सुविधाओ की कॉफी कमी है। आज भी बहुत सी लडकियाँ स्कूल जाना सिर्फ इसलिए छोड देती है वहाँ टॉयलेट की फैसेलिटी नही होती है। स्कूलो मे टीचर्स ऐसे होने चाहिए कि स्टूडेंट्स उन्हे अपना रोल मॉडल समझे। स्कूलों में सुधार के लिए जरुरी है कि टीचर्स पंक्चुअल हो। इसके अलावा सिलेबस मे भी हर पाँच साल मे चेंज जरुरी है।

जॉब ओरिएंटेड

एजुकेशन जॉब ओरिएंटेड हो। जब वे किसी कॉलेज मे कैंपस सेलेक्शन के लिए जाते है तो यही देखते है कि कैंडिडेट कितना कॉन्फिडेंट है और ऑर्गेनाइजेशन को कितना फायदा पहुँचा सकता है। कैंडिडेट को बॉडी लैंग्वेज उसकी टेक्निकल स्किल्स और एजुकेशन को सलेक्शन का क्राइटेरिया माना जाता है।

एग्जाम का डर जरुरी

दिल्ली मे एजुकेशन विभाग मे डिप्टी डायरेक्टर रह चुके डॉ. आर.ए.यादव. मानते है कि एजुकेशन एक टू वे प्रोसेस होता है। टीचर पूरी ईमानदारी और डेडिकेशन के साथ अपनी ड्यूटी निभा रहे है। इन दिनो स्टूडेंट्स की ही पढाई मे दिलचस्पी कम सी हो गई है। इसकी एक वजह बोर्ड एग्जाम का डर खत्म होना भी कहा जा सकता है। दसवी या बारहवीं की बोर्ड परीक्षा के क्वेश्चन पेपर पहले से ही कही ज्यादा सरल हो जाने से बच्चो को नम्बर तो कॉफी अच्छे आ रहे है लेकिन एजुकेशन की क्वालिटी घट गई है।

नजरिया बदलने का जरुरत

प्रॉयवेट स्कूलों मे अपने बच्चो के एडमिशन के लिए होड मच रही है। इसकी वजह है एजुकेशन के मॉडर्न स्टाइल को समय–समय पर एडॉप्ट करते रहना ताकि स्टूडेंट्स को अपटूडेट रख सके। इसके उलट सरकारी स्कूलों मे बेसिक चीजो तक का अभाव है। हफ्ते भर मे 4.5 दिन ही टीचर आते है और जाते भी है वे समय पर नही आते। यही कारण है कि कोई भी अपने बच्चो को सरकारी स्कूलो मे भेजकर उनका भविष्य खराब नही करना चाहता। कार्यक्रमों के बावजूद लोगो की यही मानसिकता है कि लड़कियो को ज्यादा पढ़–लिखकर क्या करना है। लोग लड़कियो को घर के काम–काज मे ही लगाए रखते है। दूसरे कुछ धनसंपन्न घारो के लोग अपने बच्चो को पढ़ने के लिए भेजते भी है तो इंग्लिश का बोलबाला होने की वजह से इंग्लिश स्कूलो मे ही एडमिशन कराना प्रिफर करते है। इसलिए पूरे सिस्टम को सुधारने की बेहद जरुरत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- विनोद पुस्तक मंदिरः आगरा
- https://en.wikipedia.org/wiki/Handicraft